राजस्थान राज्य के बाहर उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल दिल्ली, गुजरात एवं महाराष्ट्र राज्य में स्थित देवस्थान विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित राजकीय मंदिरों/संस्थानों की संपदाओं का विवरण ।

उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित मंदिर एवं संस्थायें :–

उत्तर प्रदेश राज्य में वाराणसी हरिद्वार, नैनीताल, मथुरा, वृन्दावन बरसाना, गोवर्धन, राधाकुण्ड, सौरा जिला एटा में विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित राजकीय मंदिर स्थित हैः–

वाराणसी में विभाग के निम्नांकित मंदिर हैः–

1 मंदिर श्री रामेश्वर जी, दण्डपाणी गली, भैरव बाजार
2 मंदिर श्री महादेव जी, (अलवर मंदिर) मणिकर्णिका घाट।
3 मंदिर श्री आदिविश्वेश्वर जी, बांस फाटक।
4 मंदिर श्री डुंगरेश्वर जी, काशी विश्वनाथ मंदिर के अन्दर,ज्ञानवापी मोहल्ला ।
5 मदिर श्री दिवानेश्वर जी,काशी विश्वनाथ मंदिर के अन्दर,ज्ञानवापी मोहल्ला ।
6 मंदिर श्री अन्नपूर्णा जी,काशी विश्वनाथ मंदिर के अन्दर,ज्ञानवापी मोहल्ला ।
7 मंदिर श्री डुंगरेश्वर जी, एंव धर्मशाला डुंगरेश्वर जी, सुडिया मोहल्ला ।
8 मंदिर श्री गोरखनाथ जी गोरख टिला मेदागिन मोहल्ला ।

उक्त मंदिरों में से क्रम संख्या 1 से 6 तक राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के तथ क्रम संख्या 7 से 8 राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी के मंदिर हैं। मंदिर एवं उसकी संपदा की समुचित व्यवस्था हेतु जिलाधिकारी, वाराणसी द्वारा नामित अधिकारी को राज्य सरकार द्वारा प्रशासक देवस्थान नियुक्त कर रखा हैं । इन मंदिरों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः–

(1) मंदिर श्री रामेश्वर जी, दण्डपाणी गली :–

इस मंदिर का निर्माण जयपुर महाराजा श्री राम सिंह जी ने करवाया था। मंदिर में एक ताम्र पत्र लगा हआ है इसमें संवत 1939 मिति माघ सुदी पंचमी को मूर्ति स्थापना कराने, मंदिर के साथ जेवर अस्बाब भेंट में देने, रानी साहिबा बहुसरा राठौड जी द्वारा अपर्ण करने का एवं मंदिर की सुरक्षा हेतु हिन्दू को गाय व मुसलमानों को सुअर की हत्या की सौगन्ध देने का उल्लेख किया गया है । मंदिर में शिवरात्रि पर विशेष पर्व मनाया जाता है । प्रबंधक, देवस्थान विभाग, वाराण्सी का कार्यालय भी इसी मंदिर में है । सेवा पूजा व्यवस्था के लिये 4 पद पूर्णकालिक राज्य सेवा में स्वीकृत हैं । नैवेध्य आरोगण के लिये 2550/– मासिक स्वीकृत हैं ।

(2) मंदिर श्री महादेव जी, मणिकर्णिका घाटः–

इस मंदिर का निर्माण अलवर महाराजा द्वारा लगभग 100 वर्ष पूर्व कराया था। यह मंदिर मणिकर्णिका घाट पर लाल पत्थर का शिखरबन्द मंदिर है दर्शनार्थियों की इस क्षैत्र में अच्छी संख्या रहती है यह मंदिर प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का है मंदिर की सेवा पूजा हेतु विभाग द्वारा पुजारी को वेतन एवं भोग दिया जाता है ।

(3) मंदिर श्री आदिविश्वेश्वर जी, बांस फाटकः–

इस मंदिर का निर्माण भी जयपुर महाराजा श्री जय सिंह द्वारा औरंगजेब के शासनकाल के समय 300 वर्ष पूर्व कराया गया था । मंदिर की सेवा पूजा हेतु वंशानुगत पुजारी कार्यरत है नैवेध्य आरोगण हेतु 6667/–रूपया मासिक स्वीकृत हैं । इस मंदिर में भैरव मंदिर एंव सौभाग्य गौरी जी का मंदिर भी है जो पीपल के वृक्ष के कारण क्षतिग्रस्त हो गये हैं । मंदिर संपदा में 4 किरायेदार हैं। 7968/– रूपया वार्षिक किराये की मांग बनती हैं ।

(4–5–6) मंदिर श्री डुंगरेश्वर जी, मंदिर श्री दिवानेश्वर जी एवं मंदिर श्री अन्नपूर्णा जी,: काशी विश्वनाथ मंदिर के अन्दर, ज्ञानवापी मोहल्ला :–

उक्त तीनों मंदिर मंदिर के रूप में न होकर इनकी प्रतिमायें काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में रखी हुई है ।

(7) मंदिर श्री डुंगरेश्वर जी एवं धर्मशाला,डुंगरेश्वर जी ,सुडिया मोहल्ला :–

बीकानेर के महाराजा श्री डुंगर सिंह जी ने धार्मिक स्थलों पर मंदिर व धर्मशालाएं बनवायी इसी म में वाराणसी के मध्य सूडिया मोहल्ले में भी मंदिर श्री डुंगरेश्वर जी महादेव एवं क्रम में धर्मशाला का निर्माण कराया जो कि काशी विश्वनाथ मंदिर के पास स्थित है। इस मोहल्ले में अधिकतर राजस्थानी परिवार ही निवास करते हैं एवं इस मंदिर में सेवा पूजा एवं आराधना करते हैं। मंदिर एवं धर्मशाला का निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व हुआ था। मंदिर में पूजा हेतु निधि सेवा में 5 पद स्वीकृत हैं। नेवेघ्य हेतु 10,800 रूपया वार्षिक व्यय किया जाता है। मंदिर संपदा में 1 किरायेदार हैं 1248/– रूपया किराये की वार्षिक मांग बनती हैं ।

वर्तमान स्थिति :–

मंदिर श्री डुंगरेश्वर जी महादेव के पास 4200 वर्ग फीट भूमि पर तीन मंजिली धर्मशाला बनी हुई थी जिसमें 33 कमरे व 5 हाल थे। वर्तमान में उक्त धर्मशाला पूर्णतया खण्डहर स्थिति में है। धर्मशाला के स्थान पर सहभगिता के आधार पर व्यवसायिक परिसर व धर्मशाला निर्माण कराये जाने के प्रस्ताव राज्य स्तर पर विचाराधीन है।

(8) मंदिर श्री गोरखनाथ जी गोरख टीला मैदागिनी मोहल्लाः–

श्री गोरखनाथ जी गोरख टीला वाराणसी वर्तमान में विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियत्रित आत्म निर्भर मंदिर श्रेणी का मंदिर है। यह मंदिर मैदागिन मोहल्ला वाराणसी में तीन मंजिलें भवन के रूप में स्थित है । इस मंदिर का निर्माण मंहत देवनाथ राजगुरू जी की प्रेरणा से जोधपुर के महाराजा मानंसिंह जी द्वारा करवाया गया था। मंदिर संपदा में 20 किरायेदार हैं। किराये की 24720/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

(9) हरिद्वार स्थित मंदिर श्री गंगा जी एवं उसकी धर्मशाला :–

इस मंदिर का निर्माण पूर्व महाराजा बीकानेर द्वारा सन् 1887 में करवाया था यह मंदिर गंगा नदी के किनारे श्रवण नाथ घाट के सम्मुख बना हुआ है। हरिद्वार के प्राचीन मंदिरो में से यह एक है। वर्तमान में यह मंदिर राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का है इस मंदिर के साथ जुडी हुई एक

धर्मशाला भी है, इसके अतिरिक्त 7 कमरों में यात्री ठहराये जाते हैं। मंदिर धर्मशाला के 10 किरायेदार हैं । किराया की 15264/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

(10). भुवाली नैनीताल स्थित लल्ली स्मारक बाग :–

नैनीताल के निकट भुवाली कस्बे में यह बाग देवस्थान विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी की संस्था है। इस बाग का निर्माण बीकानेर के भूतपूर्व महाराजा श्री गंगा सिहं जी ने अपनी पुत्री चाँदकुँवर बाई की स्मृति में करवाया था। यह स्थान नैनीताल से मात्र 15 किलोमीटर दूर स्थित है ।

वर्तमान स्थितिः–

लल्ली स्मारक बाग, भुवाली जिला नैनीताल का कुल क्षैत्रफल 60084 वर्ग फीट है। जिसमें 2162 वर्गफीट में छत्री स्मारक बना है इस बाग के चारों ओर पक्का परकोटा बना हुआ है इस सपंदा की देख रेख हेतु विभाग की ओर से चौकीदार नियुक्त है। बाग पूर्णतया समाप्त हो चुका है भूमि का गलत नामान्तरण होने से दुरस्त कराने का प्रकरण उपखण्ड अधिकारी नैनीताल के यहां विचाराधीन है। विभाग के पास वर्तमान में मात्र 1100 नाली भूमि है।

मथुरा जिले में के मंदिर एवं संस्थान :–

1 रा.प्र.प्र.मं. श्री राधामाधव जी जयपुर मंदिर वृन्दावन :–

यह मंदिर वृन्दावन (उ0प्र0) में मथुरा रोड पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण जयपुर महाराजा माधोसिंह जी द्वितीय द्वारा 1917 ई0 में अपने गुरू ब्रह्मचारी गिरधारी शरण के प्रसन्नार्थ बनवाया। उनके गुरू भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

इस मंदिर के गर्भगृह में तीन उप मंदिर हैं। प्रमुख मंदिर में काले पाषाण की श्री कृष्ण की प्रतिमा तथा राधारानी की पीतल की प्रतिमा विराजमान है। इसके दक्षिणी मंदिर में भगवान हंसगोपाल व सनक सनकादिक आदि की सफेद पत्थर की प्रतिमाएं हैं। इसी के साथ भगवान श्री कृष्ण के गिरिराज को उठाये काले पाषाण की भगवान गिरधर की प्रतिमा है। उत्तर वाले उप मंदिर में भगवान आनन्द बिहारी जी की चल प्रतिमाएं है जो प्रमुख प्रतिमा का छोटा स्वरूप है। इस मंदिर में सेवापूजा हिन्दू धर्म के निम्बार्क सम्प्रदाय के मतावलम्बानुसार की जाती है।

मंदिर का शिल्प वैभवः– यह मंदिर उत्तर भारत का सबसे विशाल एवं शिल्पकला की दृष्टि से अत्यन्त ही वैभवशाली मंदिर है। इस मंदिर में भरतपुर के वांसी पहाड़पुर के पत्थर व मकराना के संगमरमर पत्थर का उपयोग हुआ है। इसमें तीस–तीस फुट लम्बी एवं विशाल शिलाखण्डो का प्रयोग हुआ है। इसके स्तम्भ, महराब व छतों पर नक्काशी का कुशल कारीगरों द्वारा कार्य किया गया जो शिल्पकला की अनुपम धरोहर है। मंदिर के द्वार सागवान की लकड़ी के विशाल नक्काशीदार बने हुए हैं। जिन पर पीतल आदि धातुओं की चद्दर से सजा रखे हैं। मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार की ऊंचाई 80 फुट की है। तीन कंगूरे बने हुए है। दरवाजे पर उत्कृष्ट बैलबूंटे आदि नक्काशी उत्कीर्ण की हुई है। पूरे मंदिर निर्माण में कहीं भी चूना, सीमेंट अथवा बजरी का प्रयोग नहीं किया गया है।

इस मंदिर के निर्माण में 20 वर्ष का समय लगा। मकराना के संगमरमर पत्थर व भरतपुर के वांसी पहाड़पुर के विशाल प्रस्तरों को सुरक्षित लाने के लिये महाराजा माधोसिंह जी ने मथुरा से वृन्दावन तक विशेष रेल लाईन डलवाई। यह मंदिर दो मंजिला है।

मंदिर की सेवापूजा व्यवस्था हेतु पुजारी चौकीदार के 9 कर्मचारी कार्यरत हैं। एक प्रबंधक है। मंदिर में नैवेद्य हेतु 24583/– रू. मासिक स्वीकृत है। मंदिर संपदा में 12 किरायेदार हैं। किराये की 58573 रू वार्षिक मांग बनती है। इसी मंदिर परिसर में ही सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग, वृन्दावन का कार्यालय स्थापित है।

2 <u>मंदिर श्री राधाकान्त जी भीमकुंज वृन्दावन :–</u>

इस मंदिर का निर्माण कोटा रियासत के शासक द्वारा कराया गया था यह मंदिर यमुना नदी के तट पर स्थित है, मंदिर परिसर के अलावा 14890 वर्गगज भूमि व 5 कमरे हैं। मंदिर की सेवा पूजा हेतु एक पूर्णकालिक पुजारी नियुक्त है। नैवेध्य हेतु 4166/– रूपया मासिक स्वीकृत हैं ।

3. <u>मंदिर श्री कुशल बिहारी जी बरसाना :–</u>

इस मंदिर का निर्माण भी जयपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। मंदिर परिसर एवं इसकी संपदा में 70 कमरें व बगीची है। सेवा पूजा व्यवस्था की देख रेख हेतु प्रबंधक भी है। मंदिर की सेवा पूजा हेतु पुजारी चौकीदार सेवागीर के रूप में 7 कर्मचारी है। नैवेध्य के लिये 22083/– रूपया मासिक स्वीकृत हैं मंदिर संपदा में 1 किरायेदार हैं किराये की 162/– रूपया वार्षिक बनती हैं ।

4. <u>मंदिर श्री मदन मोहन जी मथुरा :–</u>

इस मंदिर का निर्माण उदयपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर आत्म निर्भर श्रेणी का है। वर्तमान में इस मंदिर की मूर्ति उदयपुर स्थित मंदिर मदन मोहन जी घाटी में प्रतिष्ठत है और सेवा पूजा हो रही है। मंदिर संपदा के 4 किरायेदार हैं। किराये की 8712/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं।

5. <u>मंदिर श्री चतुरशिरोमणी जी (जयपुर मंदिर) वृन्दावन :–</u>

इस मंदिर का निर्माण जयपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का है । मंदिर की सेवा पूजा निधि सेवा के पुजारी द्वारा की जाती है मंदिर में राधाकृष्ण की मूर्ति विराजमान है। पुजारी को वेतन 450 रूपया मासिक एवं भोगराग के लिये 900 रूपया मासिक बजट में स्वीकृत है। मंदिर संपदा के 3 किरायेदार हैं । किराये की 3564/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

6. <u>मंदिर श्री गोकुलानन्द जी (जयपुर मंदिर) वृन्दावनः–</u>

इस मंदिर का निर्माण जयपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर श्री पुरूषोत्तम गोस्वामी को सुपुर्द किया हुआ हैं ।

7. मंदिर श्री कुंज बदन सिहं जी (भरतपुर मंदिरं) केशी घाट,वृन्दावनः–

इस मंदिर का निर्माण भरतपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर गोपेश्वर रोड यमुना नदी के तट पर वृन्दावन में स्थित है। मंदिर में मूर्ति विराजमान नहीं हैं ।

8. मंदिर श्री बिहारी जी गोवर्धन :–

यह मंदिर राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का है। मंदिर की सेवा पूजा हेतु निधि सेवा का पुजारी नियुक्त है जिसे वेतन 300 मासिक एवं नैवेध्य हेतु 900 मासिक बजट में स्वीकृत है। मंदिर के पीछे कुछ खुली भूमि स्थित थी जिसे किराये पर दे रखी है। मंदिर संपदा के 15 किरायेदार हैं। किराये की 8808/–रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

9. मंदिर श्री लक्ष्मण जी गोवर्धन :–

इस मंदिर का निर्माण भरतपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। यह आत्म निर्भर श्रेणी का मंदिर है। इस मंदिर में निधि सेवा का पुजारी नियुक्त है जिसे 300 रूपये वेतन एवं भोगराग हेतु 900 रूपये निधि बजट में स्वीकृत है ।

10. मंदिर श्री अजब मनोहर जी (बीकानेर मंदिर)वृन्दावनः–

इस मंदिर का निर्माण बीकानेर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर आत्म निर्भर श्रेणी का है । मंदिर की सेवा पूजा हेतु निधि सेवा में तीन पद सृजित है जिन्हें 700 मासिक वेतन एवं भोग राग हेतु 1800 रूपया मासिक निधि बजट से दिये जाते है । मंदिर सपदा में 16 किरायेदार हैं । किराये की 70864/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

11. मंदिर श्री जुगल किशोर जी बरसानाः–

यह मंदिर राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का मंदिर है मंदिर की सेवा पूजा हेतु निधि सेवा में एक पद पुजारी का सृजित है जिसे 300 मासिक वेतन एवं भोगराग हेतु 900 रूपया मासिक निधि बजट से दिये जाते है । मंदिर सपदा में 5 किरायेदार हैं । किराये की 4872/– रूपया वार्षिक मांग बनती
हैं ।

12. मंदिर श्री किशोरी श्यामजी (भरतपुर मंदिर) राधाकुण्डः–

इस मंदिर का निर्माण भरतपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। वर्तमान में यह मंदिर राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का मंदिर है। निधि सेवा में दो पद सृजित है जिन्हें 450/– मासिक वेतन व मंदिर के भोगराग हेतु 900/– मासिक स्वीकृति है। मंदिर संपदा के 6 किरायेदार हैं । किराये की 1110/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

उत्तरांचल राज्य में स्थित

13. मंदिर श्री कुंज लाल दास जी (भरतपुर मंदिर) राधाकुण्ड :–

इस मंदिर का निर्माण भरतपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था । वर्तमाान में यह राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का मंदिर है। मंदिर संपदा में 9 किरायेदार हैं। किराये की 828/–रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

14. मंदिर श्री रूप किशोर जी वनखण्डी, वृन्दावन :–

इस मंदिर का निर्माण भी बीकानेर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। वर्तमान में यह आत्म निर्भर श्रेणी का है । मंदिर की सेवा पूजा एवं सफाई आदि के लिये निधि सेवा को दो कर्मचारी नियुक्त हैं । जिन्हें 450 रूपया मासिक वेतन दिया जाता हैं । नेवेध्य हेतु 900 रूपया मासिक स्वीकृत हैं। मंदिर संपदा के 5 किरायेदार हैं। किराये की 2400/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं ।

15. मंदिर श्री कुंज पार्वती गोपेश्वर रोड वृन्दावनः–

इस मंदिर का निर्माण भी भरतपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था । वर्तमान में यह मंदिर राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का हैं । मंदिर की सेवा पूजा हेतु निधि सेवा का पुजारी नियुक्त हैं जिसे 300/– रूपया मासिक वेतन दिया जाता हैं। मंदिर में नैवेध्य हेतु 1500/– रूपया मासिक स्वीकृत हैं ।

16. मंदिर श्री हरिशिरोमणी जी , कालिया देह, वृन्दावन :–

इस मंदिर का निर्माण जयपुर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। वर्तमान में यह मंदिर राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का हैं। मंदिर संपदा के 10 किरायंदार हैं। किराये की 15564/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं। निधि सेवा में 3 पर स्वीकृत हैं। नैवेध्य आरोगण हेतु 1500/– रूपया मासिक स्वीकृत हैं ।

17. मंदिर श्री मोहन जी कुंज अलोनियाः–

पूर्व में यह मंदिर सुपुर्दगी श्रेणी में था। वर्तमान में इस मंदिर की व्यवस्था राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी के मंदिरों के समान की जा रही हैं। मंदिर की सेवा पूजा के लिये निधि सेवा के दो कर्मचारी नियुक्त हैं जिन्हें वेतन के रूप में 600/– रूपया मासिक तथा भोग हेतु 900/–रूपया मासिक दिये जाते हैं। मंदिर सपंदा के 43 किरायेदार हैं। किराये की 108356/– रूपया वार्षिक मांग बनती हैं। मंदिर श्री मोहन जी कुंज अलोनिया के अर्न्तगत मंदिर श्री दाउ जी मथुरा हैं। मंदिर सेवा पूजा हेतु निधि सेवा का पुजारी नियुक्त हैं। जिससे 300 रूपया मासिक वेतन व 900 रूपया मासिक भोग के दिये जाते हैं।

18. मंदिर श्री बलदेव जी सौरोघाट, सौरोः–

मंदिर श्री बलदेव जी सौरोघाट सौरों जिला ऐटा में स्थित हैं। इस मंदिर परिसर एवं उसकी संपदा के रूप में एक खण्डहर हवेली हैं । इस खण्डहर हवेली एवं मंदिर के स्वामित्व संबंधी वाद न्यायालय में विचाराधीन हैं । क्योंकि पूर्व में यह मंदिर सुपुर्दगी में था ।

उत्तरांचल राज्य में देवस्थान विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित निम्नांकित मंदिर/संस्थान हैं :–

1 गंगोत्री स्थित मंदिर एवं धर्मशाला
2 धरोली स्थित धर्मशाला
3 उत्तरकाशी स्थित मंदिर श्री एकादश रूद्र जी व अंबिका जी
4 जयपुर धर्मशाला उत्तरकाशी

1. गंगोत्री स्थित मंदिर एवं धर्मशाला

गंगोत्री स्थित मंदिरएवं धर्मशाला का निर्माण जयपुर रियासत के पूर्व नरेश श्री माधोसिंह जी द्वारा करवाया गया था उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार तत्कालीन जयपुर महाराजा ने इस मंदिर के निर्माण पर एकमुश्त तीन लाख रूपया व्यय किये तथा इस मंदिर के साथ तीर्थ यात्रियों को ठहरने के लिये एक छोटी धर्मशाला का निर्माण भी करवाया गया ।

वर्तमान व्यवस्था एवं स्थिति

गंगोत्री में मुख्य मंदिर जयपुर महाराजा द्वारा निर्मित मंदिर ही है किन्तु उसकी समुचित देखभाल नहीं होने तथा विभाग द्वारा विशेष ध्यान नहीं दिये जाने से उक्त मंदिर को तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने ट्रस्ट घोषित कर दिया । तथा उपखण्ड अधिकारी की अध्यक्षता में एक प्रशासनिक समिति बना दी जो उसकी व्यवस्था देखती है। इस समिति में मंदिर के पुजारी एवं अन्य कुछ व्यक्ति भी सदस्य हैं। इस मंदिर के साथ पास में ही एक धर्मशाला भी थी जो वर्तमान में बिल्कुल ही गिर चुकी है । धर्मशाला की भूमि भी राजस्व रिकॉर्ड में उत्तरांचल राज्य सरकार के नाम दर्ज हो जाने से भूमि का नामान्तरण दुरूस्त कराने की कार्यवाही की जा रही है

धरोली स्थित धर्मशाला

गंगोत्री जाने वाले रास्ते में ही तीर्थ यात्रियों के लिये पूर्व जयपुर महाराजा द्वारा धरोली गांव में ही एक धर्मशाला का निर्माण करवाया गया था किन्तु वर्तमान में वहां केवल 600 गज का रिक्त भूखण्ड है। यह भू–खण्ड भी उत्तरांचल राज्य सरकार के नाम राजस्व रेकॉर्ड में दर्ज हो जाने से इसकी इन्द्राज दुरूस्ती की कार्यवाही की जा रही है ।

3–4 उत्तरकाशी स्थित मंदिर एवं धर्मशाला :–

उत्तरकाशी में राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का मंदिर श्री एकादश रूद्र जी व अंबिका जी एवं उसकी धर्मशाला स्थित है। राज्य सरकार द्वारा उक्त संपदा के उचित प्रबंध हेतु जिला कलक्टर के प्रतिनिधि को प्रशासक नियुक्त किया हुआ है । इस मंदिर एवं धर्मशाला का निर्माण पूर्व जयपुर नरेश द्वारा धार्मिक एवं पुण्य प्रयोजनार्थ करवाया गया था। उत्तरकाशी में प्रबंधक देवस्थान का कार्यालय हैं। सेवा पुजा की व्यवस्था के लिये 3 पूर्णकालिक राज्य सेवा के पद स्वीकृत हैं। नैवध्य आरोगण के लिये 13333/– रूपये मासिक स्वीकृत हैं ।

वर्तमान स्थिति :–

यह मंदिर एवं धर्मशाला मुख्य बाजार में स्थित है। पूर्व में भूकम्प आने से उक्त मंदिर एवं धर्मशाला के क्षतिग्रस्त हो जाने से विभाग द्वारा यात्रियों के लिये 4 कमरों का नवनिर्माण करवाया गया है । पूर्व में यहां एक अलग से धर्मशाला थी जो पूरी लकड़ी की थी जो जल गई।

वर्तमान में उस धर्मशाला के भूखण्ड में ही दुकानें बन गई है जो किराये पर है । मंदिर एवं धर्मशाला में 29 किरायेदार हैं। किराये की वार्षिक मांग 86,304/– रूपया हैं ।

दिल्ली राज्य में स्थित :–

1. मंदिर श्री भैरू जी, जन्तर –मन्तर, नई दिल्ली :–

जयपुर रियासत के महाराजा सवाई जय सिंह जी ने दिल्ली में जन्तर–मन्तर व दुधिया भैरू जी मंदिर का निर्माण 18 वीं शताब्दी में करवाया था। वर्तमान में यह मंदिर राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का मंदिर हैं। जन्तर– मन्तर, नई दिल्ली का 26130 वर्ग गज भू–भाग को विभाग द्वारा 21 मई 1962 को पुरातत्व विभाग को संभलाया गया। मंदिर श्री भेरू जी व रिक्त भूमि लगभग 6051 वर्ग गज देवस्थान विभाग के अधीन है। वर्तमान में मंदिर भूमि पर हाट बाजार बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है । मंदिर की सेवा पुजा हेतु अंशकालीन पुजारी नियुक्त है जिसे 420 रूपया मासिक सेवा पूजा के एवं 1668/– रूपये नेवेध्य के दिये जाते हैं ।

गुजरात राज्य में स्थित :–

1. मंदिर श्री मुरली मनोहर जी ,द्वारका :–

मंदिर श्री मुरली मनोहर जी द्वारका का निर्माण बीकानेर रियासत के शासक द्वारा करवाया गया था। वर्तमान में यह मंदिर राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का हैं। इस मंदिर के साथ धर्मशाला भी हैं जो वर्तमान में खण्डहर हालत में हैं। मंदिर की सेवा पूजा हेतु अंशकालीन पुजारी नियुक्त हैं ।

महाराष्ट्र राज्य में स्थित राजकीय मंदिरों एवं संपदा :–

देवस्थान विभाग राजस्थान द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के मंदिर महाराष्ट्र राज्य के औंरगाबाद व अमरावती जिले में स्थित हैं ।

महाराष्ट्र राज्य में स्थित मंदिर मध्य युग में मुगल शासकों के सेनापति के रूप में जयपुर एवं बीकानेर के शासकों ने दक्षिण प्रवास पर अपने इष्ट देवी/देवताओं के मंदिरों का निर्माण करवाया था जो निम्न प्रकार है :–

1. मंदिर श्री तुलजामाता जी,, करणीमाता जी, ग्राम कर्णपुरा, जिला औंरगांबाद
2. मंदिर श्री बालाजी, औरंगाबाद ।
3. मंदिर श्री वैष्णव बालाजी,, औरंगाबाद ।
4. मंदिर श्री हनुमान जी, जयसिंहपुरा, पडगांव औरंगाबाद ।
5. मंदिर श्री विटठलरायजी जयसिंहपुरा बेगमपुरा औरंगाबाद ।
6. मंदिर श्री हनुमान जी,, रेल्वे स्टेशन के पास, औरंगाबाद ।
7. मंदिर श्री हनुमान जी एवं छतरी राजा मानसिहं अचलपुरा जिला अमरावती ।

इन मंदिरों के अतिरिक्त मंदिर श्री ऋषभदेव जी धुलेव तहसील खेरवाडा जिला उदयपुर के नाम महाराष्ट्र राज्य के यवतमाल जिले में स्थित पहूर गांव में 29.18 एकड़ भूमि भी स्थित हैं।

1. **मंदिर श्री तुलजामाता जी, करणीमाता जी उर्फ देवगिरी माता जी, ग्राम करणपुरा औरगांबादः–**

यह मंदिर औंरगाबाद शहर के पास स्थित कर्णपुरा गांव है। मंदिर की सेवा पुजा पुस्तैनी औसरेदार पुजारियों द्वारा की जाती हैं । इस मंदिर को महाराष्ट्र राज्य के पब्लिक ट्रस्ट एक्ट सन 1950 के अंतर्गत संयुक्त धर्मादा आयुक्त द्वारा पंजिकृत कर लिया है, जिसे निरस्त कराने की कार्यवाही विभाग द्वारा कर दी गई है। मंदिर संपदा में मंदिर परिसर के अतिरिक्त एक बावडी, कच्चा परकोटा तथा पीछे टीन शेड हैं ।

2 **मंदिर श्री बाला जी, औरगाबाद :–**

मंदिर श्री बालाजी श्री तुलजामाता मंदिर के पीछे की और अवस्थित हैं । मंदिर की सेवा पूजा वंशानुगत मराठी ब्राहम्ण द्वारा की जाती हैं। इस मंदिर को महाराष्ट्र राज्य के पब्लिक ट्रस्ट एक्ट सन 1950 के अंतर्गत संयुक्त धर्मादा आयुक्त द्वारा पंजिकृत कर लिया है, जिसे निरस्त कराने की कार्यवाही विभाग द्वारा कर दी गई है मंदिर संपदा में मंदिर परिसर के अतिरिक्त 2.24 एकड कृषि भूमि हैं। यह भूमि मिलेक्ट्री ऐरिया के नजदीक स्थित हैं। भूमि पर दो बावडिया भी हैं। मंदिर के चारों तरफ पुजारियों के बडे–बडे आवास गृह हैं ।

3. **मंदिर श्री वैष्णव बालाजी, औरगांबाद :–**

यह मंदिर भी तुलजामाता मंदिर के पास स्थित हैं। जो खण्डहर अवस्था में हैं। इस मंदिर की सेवा पूजा वैष्णव पुजारियों द्वारा वंशानुगत रूप से की जाती हैं। मंदिर के अतिरिक्त कोई संपदा मंदिर की नहीं हैं। मंदिर से लगे पुजारियों के मकान हैं। मंदिर व मकान में जाने का मार्ग एक ही हैं। इस मंदिर को महाराष्ट्र राज्य के पब्लिक ट्रस्ट एक्ट सन् 1950 के अंतर्गत संयुक्त धर्मादा आयुक्त द्वारा पंजीकृत कर लिया है, जिसे निरस्त कराने की कार्यवाही विभाग द्वारा कर दी गई है।

4. **मंदिर श्री हनुमान जी, जयसिंहपुरा पडेगांव, औरगांबाद :–**

मंदिर श्री हनुमानजी, जयसिंहपुरा औरगांबाद से करीब 12 किलोमीटर दूर पडेंगाव में नदी के किनारे पर स्थित हैं। मंदिर की सेवा पूजा वंशानुगत पुजारियों द्वारा की जाती हैं। इस मंदिर को महाराष्ट्र राज्य के पब्लिक ट्रस्ट एक्ट सन 1950 के अंतर्गत संयुक्त धर्मादा आयुक्त द्वारा पंजिकृत कर लिया है, जिसे निरस्त कराने की कार्यवाही विभाग द्वारा कर दी गई है । मंदिर से लगी हुई 1.27 एकड भूमि चारों और से खुली हुई हैं। पास में दो कमरे भी बने हुए हैं ।

5. **मंदिर श्री विटठल राय जी जयसिंह पुरा बेगमपुरा औंरगाबादः–**

मंदिर श्री विट्ठल राय जी औंरगाबाद शहर के मोहल्ला बेगमपुरा में जयसिंहपुरा में स्थित हैं। इस मंदिर की सेवा पूजा वंशानुगत पुजारियों द्वारा की जाती हैं। मंदिर के चारों तरफ दीवार बनी हुई हैं। मंदिर परिसर के अलावा कोई भूमि नहीं हैं 400 वर्गगज मंदिर परिसर हैं ।

6. <u>मंदिर श्री हनुमान जी , रेल्वे स्टेशन के पास औरंगाबाद :–</u>

यह मंदिर औंरगाबाद रेल्वे स्टेशन के पास स्थित है। मंदिर की सेवा पूजा पुस्तैनी पुजारी की जाती हैं। वर्तमान में श्री शान्तिलाल वैष्णव मंदिर का पुजारी हैं। मंदिर सेवा पूजा के रूप में मिलनेवाली राशि पुजारी द्वारा लेना बन्द कर दिया हैं। इस मंदिर को महाराष्ट्र राज्य के पब्लिक ट्रस्ट एक्ट सन 1950 के अंतर्गत संयुक्त धर्मादा आयुक्त द्वारा पंजिकृत कर लिया है, जिसे निरस्त कराने की कार्यवाही विभाग द्वारा कर दी गई है मंदिर के साथ 3.12 एकड भूमि थी जिसमें से 3.3 एकड भूमि औरंगाबाद परिवहन कार्यालय हेतु महाराष्ट्र सरकार ने अवाप्त कर ली। भूमि का मुआवजा प्राप्त नहीं हुआ हैं। पुजारी ने मंदिर की भूमि पर दो कमरों का आवास भी बना लिया हैं। शेष भूमि मंदिर से लगी हुई हें ।

7. <u>मंदिर श्री हनुमान जी एवं छतरी राजा मानसिहं अचलपुरा अमरावती :–</u>

यह मंदिर अमरावती जिले से लगभग 50 किलोमीटर दूर अचलपुरा ग्राम में मोहल्ला जयसिंहपुरा में स्थित हैं। मंदिर की सेवा पुजा पुस्तैनी पुजारी द्वारा की जाती हैं। वर्तमान में पुजारी ठाकुर लाल बहादुरसिहं हैं। मंदिर के सेवा पूजा हेतु 30 रूप्या प्रतिदिन के हिसाब से विभाग द्वारा राशि दी जाती हैं। इस मंदिर की 411.10 एकड भूमि थी। महाराष्ट्र सरकार द्वारा इस भूमि को अवाप्त कर का तकारों के खाते में अंकित कर दी। इस भूमिं का मुआवजा 55,189/– रूपया तय हो चुका। राशि विभाग को अभी तक प्राप्त नही हुई हैं। वर्तमान में मंदिर के पास 86574 वर्गफीट भूंमि के दो भूखण्ड हैं। महाराज मानसिंह की छतरी नदी के पार स्थित हैं। जो जीर्ण–शीर्ण हैं ।

8. <u>ग्राम पहूर जिला यवतमाल स्थित 29.18 एकड भूमि :–</u>

राजकीय आत्म निर्भर मंदिर श्री ऋषभदेव जी, ग्राम धुलेव, तहसील, खेरवाड़ा जिला उदयपुर की ग्राम पहुर तहसील बामूल जिला यवतमाल में 29.18 एकड कृषि भूमि हैं। इस भूमि की देख रेख श्री केशरीमल, टोडरवाल करतें हैं। यह भूमि भी महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रस्तावित बेगल्ला नदी बांध योजना में डुब में आने की सूचना हैं ।

महाराष्ट्र स्थित राजकीय मंदिरों के संबंध में देवस्थान, वक्फ एवं सैनिक कल्याण राजस्थान एवं सैनिक कल्याण विभाग राजस्थान–जयपुर की अधिसूचना एफ 5 (4) देव/97 दिनांक 21.2.97 द्वारा प्रबंधकारिणी समिति का गठन किया गया । उक्त समिति के अध्यक्ष/सदस्य निम्नानुसार

1– उपायुक्त देवस्थान विभाग, जयपुर	–	अध्यक्ष
2– श्री अनन्त प्रसाद गनेरीवाल, अमरावती	–	सदस्य
3– श्री सत्यनारायण लोहरिया, बम्बई	–	सदस्य
4– श्री मोहनलाल भाटी, औरगांबाद	–	सदस्य
5– श्री एन0 पी0 जाजू औरंगाबाद	–	सदस्य

उक्त प्रबंधकारणी समिति का कार्यकाल 20.2.2002 को समाप्त होने के संबंध में राज्य सरकार को पत्र क्रमांक एफ 5/11/न्याय/देव/96/608 दिनांक 9.1.2002 द्वारा निवेदन किया गया हैं ।

गठित प्रबंधकारिणी समिति ने औंरगाबाद स्थित राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रणी के 5 मंदिरों को संयुक्त धर्मादा आयुक्त द्वारा बम्बई पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1950 के तहत पंजीयन करने के फलस्वरूप विभाग का नियंत्रण न होने के संबंध में विधि स्थिति की जाँच कर बम्बई पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1950 की धारा 70 ए के तहत सक्षम न्यायालय में रिवीजन याचिका श्री सोमनाथ लढ्ढा, एडवोकेट, औरगांबाद से तैयार करा निम्नानुसार संयुक्त धर्मादा आयुक्त औरगांबाद के न्यायालय में प्रस्तुत की ।

1– राजस्थान सरकार बनाम बालाजी हनुमान जी मंदिर करणपुरा, वाद संख्या 1/97
2. राजस्थान सरकार बनाम तुलजामाता मंदिर करणपुरा वाद संख्या 2/97
3. राजस्थान सरकार बनाम बालाजी मंदिर करणुपरा वाद संख्या 3/97
4. राजस्थान सरकार बनाम हनुमान मंदिर रेल्वे स्टेशन औरंगाबाद वाद संख्या 4/97
5. राजस्थान सरकार बनाम हनुमान जी पडेगांव मंदिर वाद संख्या 5/97

औरंगाबाद स्थित उक्त मंदिरो की सहायक चेरिटी कमीशनर, औरंगाबाद के यहॉ रिविजन अण्डर सेक्शन 70ए. बी.पी.टी. एक्ट 1950 के अंतर्गत विचाराधीन वादो की स्थिति निम्नानुसार है :–

1. वाद संख्या 1/97– (राजस्थान सरकार बनाम बालाजी हनुमान जी मंदिर करणपुरा,) दिनांक 24.9.2002 को विभाग के पक्ष मे निर्णित हो गया ।
2. वाद संख्या 2/97 . (राजस्थान सरकार बनाम तुलजामाता मंदिर(करणपुरा) प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है ।
3. वाद संख्या 3/97 (राजस्थान सरकार बनाम बालाजी मंदिर करणुपरा) दिनांक 24.9.2002 को विभाग के पक्ष मे निर्णित हो गया ।
4. वाद सख्या 4/97 राजस्थान सरकार बनाम हनुमान मंदिर रेल्वे स्टेशन, औरंगाबाद प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है ।
5. वाद संख्या 5/97 राजस्थान सरकार बनाम हनुमान जी पडेगांव मंदिर दिनांक 5.12.2000 को विभाग के पक्ष मे निर्णित हो गया ।

मंदिर श्री हनुमान पडेगांव औरंगाबाद की भूमि राजस्थानी प्रवासी लेना चाहते हैं तो उनको ट्रस्ट बनाकर सुपुर्द करने हेतु सम्पर्क किया जाकर भूमि आंवटन करने की कार्यवाही की जावेगी ताकि कोई अनाधिकृत व्यक्ति उस पर कब्जा न कर सके । इसी प्रकार मंदिर श्री हनुमान जी रेल्वे स्टेशन, औरंगाबाद की भूमि जो आर0टी0ओ0 कार्यालय के लिये अवाप्त की गई उसका मुआवजा 44000 रू के भुगतान हेतु जिलाधिकारी औरंगाबाद को पत्र क्रमाक एफ4(7)संपदा/देव /97 /9612 दिनांक 21.8.03 द्वारा निवेदन किया गया है । इस संबध मे पत्र क्रमांक 11157 दिनाक 24.9.03 से जिलाधिकारी औरंगाबाद को स्मरण भी कराया गया है ।

भूपेन्द्र/

माननीया प्रमुख शासन सचिव महोदया द्वारा दिल्ली,उत्तरप्रदेश व उत्तरांचल राज्यों में स्थित देवस्थान संपदाओं के निरीक्षण,प्रबंध की कठिनाईयां एवं विकास के संबंध में विभागीय टिप्पणी :–

दिल्ली राज्य :– देवस्थान विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित राजकीय मंदिर निम्नानुसार हैः–

1. मंदिर श्री भैरू जी, जन्तर मन्तर, नई दिल्ली ।
2. मंदिर श्री हनुमान जी, जयपुर मंदिर,भूतपूर्व जयसिंहपुरा,वर्तमान थाना मार्ग, महानगर परिषद भवन के पीछे,नई दिल्ली ।

1. मंदिर श्री भैरू जी, जन्तर –मन्तर, नई दिल्ली :–

जयपुर रियासत के महाराजा सवाई जय सिंह जी ने दिल्ली में जन्तर–मन्तर व दुधिया भैरू जी मंदिर का निर्माण 18 वीं शताब्दी में करवाया था । वर्तमान में यह मंदिर राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का मंदिर हैं । जन्तर– मन्तर, नई दिल्ली का 26130 वर्ग गज भू–भाग को विभाग द्वारा 21 मई 1962 को पुरातत्व विभाग को संभलाया गया । मंदिर श्री भेरू जी व रिक्त भूमि लगभग 6051 वर्ग गज देवस्थान विभाग के अधीन है । वर्तमान में मंदिर भूमि पर हाट बाजार बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है । मंदिर की सेवा पुजा हेतु अंशकालीन पुजारी नियुक्त है जिसे 420 रूपया मासिक सेवा पूजा के एवं 1668/– रूपये नेवेध्य के दिये जाते हैं । यह मंदिर जन्तर मन्तर के अहाते में स्थित होने से इसका पर्यटकीय महत्व है। अतः इस खुली भूमि को पर्यटन की दृष्टि से भी विकसित किया जा सकता है ।

2. मंदिर श्री हनुमान जीजयपुर मंदिर,भूतपूर्व जय सिंहपुरा,वर्तमान थाना मार्ग, महानगर परिषद भवन के पीछे,नई दिल्ली ।

मंदिर श्री हनुमान जी का निर्माण जयपुर के महाराजा मान सिंह जी (प्रथम) ने करवाया था । इस मंदिर का जिर्णोद्धार महाराजा जय सिंह जी (प्रथम) ने करवाया । यह मंदिर सुपुर्दगी श्रेणी का है मंदिर में पुश्तैनी सुपुर्दगार है ।

उत्तर प्रदेश राज्य :–

उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा,वृन्दावन,बरसाना,गोवर्धन,राधा कुण्ड,कुसुम सरोवर आदि स्थानों पर विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित राजकीय मंदिर एवं संस्थायें स्थित है :–

1. मंदिर श्री मदन मोहन जी,स्वामीघाट, मथुरा
2. मंदिर श्री दाउ जी भूतेश्वर जी व मोहन जी, कुंज अलौनिया, मथुरा ।
3. मंदिर श्री राधामाधव जी, (जयपुर मंदिर) वृन्दावन ।
4. मंदिर श्री राधाकान्त जी, (कोटा मंदिर) वृन्दावन ।
5. मंदिर श्री चतुरशिरोमणी जी, (जयपुर मंदिर) वृन्दावन ।
6. मंदिर श्री गोकुलानन्द जी,(जयपुर मंदिर) वृन्दावन ।
7. मंदिर श्री कुंज बदन सिंह जी, (भरतपुर मंदिर) केशी घाट,वृन्दावन ।
8. मंदिर श्री अजब मनोहर जी,(बीकानेर मंदिर) वृन्दावन ।
9. मंदिर श्री रूपकिशोर जी,वनखण्डी, वृन्दावन ।
10. मंदिर कुंज पार्वती जी, गोपेश्वर रोड़, वृन्दावन ।
11. मंदिर श्री हरिशिरामणी जी, कालिया देह, वृन्दावन ।

12. मंदिर श्री कुशल बिहारी जी (जयपुर मंदिर), बरसाना ।
13. मंदिर श्री जुगल किशोर जी (भरतपुर मंदिर) बरसाना ।
14. मंदिर श्री बिहारी जी (भरतपुर मंदिर) गोवर्धन ।
15. मंदिर श्री लक्ष्मण जी, (भरतपुर मंदिर) गोवर्धन ।
16. मंदिर श्री किशोरी श्याम जी, (भरतपुरमंदिर) राधाकुण्ड ।
17. मंदिर श्री कुंज लाल दास जी (भरतपुर मंदिर) राधाकुण्ड ।

मथुरा जिले के मंदिर :–

मथुरा स्थित दो मंदिरों में से एक मंदिर श्री मदन मोहन जी,स्वामी घाट, मथुरा को मंदिर श्री कल्याणराय जी,सार्वजनिक चेरिटेबल ट्रस्ट, कांकरोली को सुपुर्दगी में दिया जा चुका है । दूसरा मंदिर श्री दाऊ जी भूतेश्वर जी एवं मोहन जी कुंज अलौनिया का है । पूर्व में यह मंदिर सुपुर्दगी श्रेणी के थे । सुपुर्दगार की मृत्यु के पश्चात मंदिर का कब्जा विभाग द्वारा लिया जाकर सेवा पूजा का प्रबंध किया जा रहा है । मंदिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है । मंदिर की भूमि के संबंध में न्यायालय में वाद विचाराधीन है । मंदिर के जीर्णोद्धार एवं विकास तथा समुचित प्रबंध के लिये इसे किसी सेवाभावी पंजीकृत संस्था /प्रन्यास को सुपुर्दगी में दिया जाना उचित होगा ।

वृन्दावन स्थित मंदिर :–

1. मंदिर श्री राधामाधव जी,(जयपुर मंदिर) वृन्दावन

वृन्दावन में विभाग के प्रबंधाधीन राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का मंदिर श्री राधामाधव जी,मथुरा–वृन्दावन मार्ग पर स्थित है । यह मंदिर (जयपुर मंदिर) के नाम से जाना जाता है । यह मंदिर कलात्मक दृष्टि से अद्वितीय है तथा लगभग 9 एकड भूमि में स्थित है । उत्तर भारत के प्रमुख मंदिरों में इस मंदिर का नाम है । मंदिर के बाहर 168582 वर्ग फीट जमीन रिक्त पडी है । यह भूमि श्री श्रीपाद बाबा (बृज अकादमी) को लीज पर दी गई थी जिन्होनें भूमि को राजस्व अभिलेख में अपने नाम करा ली जिसका नामान्तरकरण संशोधन का प्रकरण आगरा मण्डल आगरा में विचाराधीन है । मंदिर की खुली भूमि के विकास के प्रस्ताव शासन को प्रेषित किये जा चुके हैं ।

2. मंदिर श्री राधाकान्त जी, वृन्दावन

यह मंदिर वृन्दावन में यमुना किनारे पर बना हुआ है किन्तु जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है । मंदिर के साथ खुली भूमि है जिस पर धर्मशाला एवं संन्त निवास अथवा अन्नक्षैत्र आदि का निर्माण कराया जा सकता है । विभाग द्वारा इसके नक्शे एवं तखिमाना भी तैयार करवाये गये हैं जो शासन को भिजवाये जा चुके हैं । मंदिर को किसी सेवाभावी संस्था को सुपुर्दगी में विकास एवं सुचारू प्रबंध हेतु दिया जा सकता है ।

वृन्दावन के शेष मंदिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है अथवा लगभग गिर चुके हैं । इन मंदिरों में किरायेदार रहते हैं तथा सेवा पूजा प्रबंध आदि की भी सामान्य व्यवस्था है । दर्शनाथियों की आवक भी बहुत कम है,उचित यह रहेगा कि इन मंदिरों को विकास एवं प्रबंध हेतु विभिन्न सेवाभावी संस्थाओं को सुपुर्दगी में दे दिया जाये ।

3. **मंदिर श्री कुशल बिहारी जी, बरसाना**

यह मंदिर राधा के गॉव बरसाने में स्थित है तथा कलात्मक एवं पुरातात्विक है । मंदिर के साथ पीछे काफी खुली भूमि है । बरसाने में आने वाले तीर्थ यात्रियों का यह आकषर्ण का केन्द्र है । मंदिर में विभाग की ओर से एक विश्रान्ति गृह भी संचालित है । इस मंदिर का पर्यटन की दृष्टि से विकास किया जा सकता है । विभाग द्वारा कुछ वर्षो से वहॉ राधाष्टमी का पर्व बड़े पैमाने पर मनाया जा रहा है ।

4. **गोवर्धन स्थित मंदिर :–**

गोवर्धन में परिक्रमा मार्गो मे विभाग के प्रबंधाधीन निम्न दो मंदिर हैं :–

1. मंदिर श्री बिहारी जी, (भरतपुर मंदिर) गोवर्धन
2. मंदिर श्री लक्ष्मण जी (भरतपुर मंदिर) गोवर्धन

उक्त दोनों मंदिर मरम्मत तलब है । इसमें से मंदिर श्री लक्ष्मण जी, गोवर्धन को सुपुर्दगी में देने का प्रकरण विचाराधीन है ।

गोवर्धन की परिक्रमा का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व है । लाखों तीर्थ यात्री पैदल परिक्रमा करते हैं । गोवर्धन परिक्रमा सात कोस(लगभग 21 किलो मीटर) की बताई जाती है । बृज परिक्रमा मार्ग में भरतपुर एंव मथुरा जिले के कई ग्राम व कस्बे आते हैं, जिनमें कई मंदिर स्थित है। परिक्रमा मार्ग में आने वाले मंदिरो का पर्यटन की दृष्टि से विकास किया जा सकता है। गोवर्धन परिक्रमा के मार्ग में राधाकुण्ड, कुसुमसरोवर, चन्द्रसरोवर, जतीपुरा, सकीतरा, आदि गॉव आते हैं जिनमें विभागीय सुपुर्दगी श्रेणी के मंदिर हैं । ग्राम जतीपुरा भगवान श्रीनाथ जी का प्राकट्य स्थल है तथा उसका धार्मिक महत्व है ।

5. **राधाकुण्ड**:–

मथुरा जिले में प्रमुख तीर्थ राधाकुण्ड में विभाग के प्रबंधाधीन निम्न दो मंदिर है :–

1. मंदिर श्री किशोरी श्याम जी, (भरतपुर मंदिर),राधाकुण्ड
2. मंदिर श्री कुंज लाल दास (भरतपुर मंदिर) राधाकुण्ड

यह मंदिर भी जीर्णावस्था में है तथा इनकी भूमि पर अतिक्रमण है । मंदिरों का पर्यटन की दृष्टि से विकास किया जा सकता है ।

जिला ऐटा :–

एटा जिले में सौरो घाट पर श्री बलदेव जी का मंदिर विभागीय है । इस मंदिर के स्वामित्व का प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है ।

उत्तरांचल राज्य :–

उत्तरांचल राज्य में देवस्थान विभाग द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित निम्नांकित मंदिर/संस्थान हैं :–

1. गंगोत्री स्थित मंदिर एवं धर्मशाला
2. धरोली स्थित धर्मशाला
3. उत्तरकाशी स्थित मंदिर श्री एकादश रूद्र जी व अंबिका जी
4. जयपुर धर्मशाला उत्तरकाशी
5. श्री गंगा मंदिर , हरिद्वार

1. गंगोत्री स्थित मंदिर एवं धर्मशाला

गंगोत्री स्थित मंदिरएवं धर्मशाला का निर्माण जयपुर रियासत के पूर्व नरेश श्री माधोसिंह जी द्वारा करवाया गया था। उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार तत्कालीन जयपुर महाराजा ने इस मंदिर के निर्माण पर एकमुश्त तीन लाख रूपया व्यय किये थे तथा इस मंदिर के साथ तीर्थ यात्रियों को ठहरने के लिये एक छोटी धर्मशाला का निर्माण भी करवाया गया था ।

वर्तमान व्यवस्था एवं स्थिति

गंगोत्री में मुख्य मंदिर जयपुर महाराजा द्वारा निर्मित मंदिर ही है किन्तु उसकी समुचित देखभाल नहीं होने तथा विभाग द्वारा विशेष ध्यान नहीं दिये जाने से उक्त मंदिर को तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने ट्रस्ट घोषित कर दिया, तथा उपखण्ड अधिकारी की अध्यक्षता में एक प्रशासनिक समिति बना दी जो उसकी व्यवस्था देखती है। इस समिति में मंदिर के पुजारी एवं अन्य कुछ व्यक्ति भी सदस्य हैं । इस मंदिर के साथ पास में ही एक धर्मशाला भी थी जो वर्तमान में बिल्कुल ही गिर चुकी है । धर्मशाला की भूमि भी राजस्व रिकॉर्ड में उत्तराचंल राज्य सरकार के नाम दर्ज हो जाने से भूमि का नामान्तरण दुरूस्त कराने की कार्यवाही की जा रही है। इस संबंध में शासन के स्तर से उत्तरांचल शासन से वार्ता कर त्वरित कार्यवाही कराना आवश्यक है । गंगोत्री धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है इसलिये वहॉ स्थित धर्मशाला की भूमि पर नवीन धर्मशाला का निर्माण किसी दानदाता/सहयोगी संस्था के माध्यम से करवाया जा सकता है ।

धरोली स्थित धर्मशाला

गंगोत्री जाने वाले रास्ते में ही तीर्थ यात्रियों के लिये पूर्व जयपुर महाराजा द्वारा धरोली गांव में ही एक धर्मशाला का निर्माण करवाया गया था किन्तु वर्तमान में वहां केवल 600 गज का रिक्त भूखण्ड है । यह भू–खण्ड भी उत्तराचंल राज्य सरकार के नाम राजस्व रेकॉर्ड में दर्ज हो जाने से इसकी इन्द्राज दुरूस्ती की कार्यवाही की जा रही है । इस संबंध में शासन के स्तर से उत्तरांचल शासन से वार्ता कर त्वरित कार्यवाही कराना आवश्यक है । धरोली धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है इसलिये वहॉ स्थित धर्मशाला की भूमि पर नवीन धर्मशाला का निर्माण किसी दानदाता/सहयोगी संस्था के माध्यम से करवाया जा सकता है ।

3–4 उत्तराकाशी स्थित मंदिर एवं धर्मशाला :–

उत्तरकाशी में राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का मंदिर श्री एकादश रूद्र जी व अंबिका जी एवं उसकी धर्मशाला स्थित है । राज्य सरकार द्वारा उक्त संपदा के उचित प्रबंध हेतु जिला कलक्टर के प्रतिनिधि को प्रशासक नियुक्त किया हुआ है । इस मंदिर एवं धर्मशाला का निर्माण पूर्व जयपुर नरेश द्वारा धार्मिक एवं पुण्य प्रयोजनार्थ करवाया गया था । उत्तरकांशी में प्रबंधक देवस्थान का कार्यालय हैं । सेवा पुजा की व्यवस्था के लिये 3 पूर्णकालिक राज्य सेवा के पद स्वीकृत हैं । नैवध्य आरोगण के लिये 13333/– रूपये मासिक स्वीकृत हैं ।

वर्तमान स्थिति :–

यह मंदिर एवं धर्मशाला मुख्य बाजार में स्थित है । पूर्व में भूकम्प आने से उक्त मंदिर एवं धर्मशाला के क्षतिग्रस्त हो जाने से विभाग द्वारा यात्रियों के लिये 4 कमरों का नवनिर्माण करवाया गया है । पूर्व में यहां एक अलग से धर्मशाला थी जो पूरी लकडी की थी जो जल गई। वर्तमान में उस धर्मशाला के भूखण्ड में ही दुकानें बन गई है जो किराये पर है । मंदिर एवं धर्मशाला में 29 किरायेदार हैं । किराये की वार्षिक मांग 86,304/– रूपया हैं ।

प्रस्ताव :–

यह मंदिर एवं धर्मशाला उत्तरकाशी के मुख्य बाजार में स्थित है जिसका व्यवसायिक/धार्मिक महत्व है । उत्तरकाशी आने वाले तीर्थ यात्रियों के लिये धर्मशाला का नवीनीकरण एवं विस्तार किया जा सकता है ।

6. श्री गंगा मंदिर , हरिद्वार :–

हरिद्वार में विभाग के प्रबंधाधीन प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी का एक मंदिर गंगा जी का स्थित है जो बीकानेर मंदिर के नाम से जाना जाता है । मंदिर परिसर में ही एक छोटी धर्मशाला बनी हुई है जिसका विकास किया जा सकता है । वर्तमान में यहां आने वाले यात्रियों को ठहरने की सुविधा है । इस मंदिर के स्वामित्व संबंधी वाद भी न्यायालय में विचाराधीन है ।

वृन्दावन संभाग के अन्तर्गत आने वाले मंदिरों की खुली भूमि के उपयोग के संबंध में एक विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट शासन को अर्द्ध शा0 पत्र क्र0 एफ 7(1)लेखा/देव/2004/7390 दिनाक 2.8.04 द्वारा भिजवाई गई है ।(छाया प्रति संलग्न)

वाराणसी स्थित मंदिर :–

वाराणसी स्थित मंदिरों के उचित प्रबंध,रख–रखाव तथा विकास में सहयोग करते हेतु काशी (वाराणसी) में रहने वाले राजस्थान मूल के निवासियों का पत्र प्राप्त हुआ जो शासन को पत्र क्र0 एफ 4(17)संपदा/देव/2004/11416 दिनांक 10.11.04 द्वारा प्रेषित किया गया है । (छाया प्रति संलग्न)यदि वाराणसी स्थित मंदिरों का निरीक्षण कार्यक्रम बनाया जाता है तो मौके पर सहयोगी संस्थाओं से विकास कार्यक्रमों पर चर्चा की जा सकती है ।

कार्यालय आयुक्त देवस्थान विभाग, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक : एफ 4(17)संपदा/देव/04/
दिनांकः'–
वास्ते,,

विशिष्ठ सहायक,
माननीया मंत्री महोदया,
देवस्थान विभाग,
राजस्थान, जयपुर ।

विषयः– दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल राज्य में स्थित देवस्थान संपदाओं का निरीक्षण कार्यक्रम ।

––

महोदय,

उत्तर भारत में देवस्थान विभाग के प्रबंधाधीन मंदिर दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल राज्यों में स्थित है । विभागीय मंदिरों के साथ खुली भूमि एवं मकानात लगे हुये हैं, जिसके विकास की विपुल संभावनायें है ।

मथुरा,वृन्दावन,राधाकुण्ड,बरासाना, कांमा, गोवर्धन आदि क्षैत्र ,ब्रज क्षैत्र कहलाता है, जिसका आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्व है । इस क्षैत्र में लाखें तीर्थ–यात्री प्रतिवर्ष श्री कृष्ण जन्म भूमि एवं कर्म स्थली के दर्शनार्थ आते हैं । गोवर्धन एवं ब्रज की परिक्रमा का भी धार्मिक महत्व है ।

विभाग के प्रबंधाधीन मंदिर एवं खुली भूमि तथा मकानात समूचे ब्रज क्षैत्र में स्थित है जो जीर्ण–शीर्ण हो गई है तथा अतिक्रमणों के विवाद न्यायालय में विचाराधीन है । इन मंदिरों एवं सम्पतियों की स्थानीय समस्यायें भी है जिसका निदान स्थानीय जिला प्रशासन के सहयोग से किया जा सकता है । पूर्व में प्रमुख शासन सचिव ,देवस्थान विभाग, श्री आई0 सी0 श्रीवास्तव एंव देवस्थान आयुक्त श्री देवनारायण थानवी की एक बैठक उत्तर प्रदेश शासन के प्रमुख सचिव,प्रशासनिक सुधार विभाग,श्री पी0एल0 पूनिया के कार्यालय में आयोजित हुई थी जिसमें उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित राजस्थान सरकार के मंदिरों एवं उनकी सम्पतियों के सीमांकन,मूल्यांकन एवं अतिक्रमण को हटाने के संबंध में चर्चा हुई थी । उत्तर प्रदेश शासन से यह निवेदन किया गया था कि यू0पी0 पब्लिक प्रिमिसेज(एविक्शन ऑफ अन अथोराईज्ड आक्युपेशन) एक्ट,1972 की धारा 2 (ई) में केन्द्र सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार के अतिरिक्त अन्य राज्यों की सम्पति को भी सम्मिलित करते हुये ''पब्लिक प्रिमिसेज'' के रूप में परिभाषित किया जावे । आयुक्त देवस्थान के पत्र एफ3(2)संपदा/दंव/96 दिनांक 11.4.96 की छाया प्रति संलग्न है । अतः इस संबंध में श्रीमान के स्तर से पुनः वार्ता की जा सकती है । राजस्थान पब्लिक प्रिमिसेज एक्ट के प्रावधान उत्तर प्रदेश राज्य में लागू नहीं है । इसलिये वहां स्थित सम्पतियों के अतिक्रमणों को हटाने या अन्य विवादों के संबंध में जिला न्यायालयों में वाद करने होते हैं जो दीर्घ कालीन न्यायिक प्रक्रिया है । इस संबंध में प्रभावी कार्यवााही हेतु शासन को प्रस्ताव भी प्रेषित किये गये हैं । (छाया प्रति संलग्न है)

इसी प्रकार दिल्ली ,वाराणसी ,हरिद्वार,उत्तरकाशी, धरोली, व गंगोत्री आदि तीर्थ स्थालों पर भी विभाग के मंदिर एवं खुली भूमि स्थित है । समूचे उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित मंदिरों का तीर्थाटन एवं देशाटन की दृष्टि से महत्व है ।

अतः कृपया उपरोक्त क्षैत्रों का निरीक्षण कार्यक्रम बनाने का कष्ट करावें ताकि मौके पर स्थानीय दानदाता व्यक्तियों एवं सहयोग करने वाली संस्थाओं से मंदिरों के विकास में सहयोग की चर्चा हो सके , एवं स्थानीय जिला प्रशासन से भी वार्ता कर मौके पर समस्याओं का समाधान के निर्णय लिये जा सकें । उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल राज्यों में स्थित मंदिरों का संक्षिप्त विवरण संलग्न किया जा रहा है । कृपया माननीया मंत्री महोदया को अवलोकन कराने का श्रम करें ।

संलग्नः– उपरोक्तानुसार

भवदीय,

आयुक्त

स्वतःपूर्ण टिप्पणी

विषयः– राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार मंदिर श्री दूधिया भैरू जी,जन्तर मन्तर, नई दिल्ली की भूमि के संबंध में ।

——

जयपुर महाराजा सवाई जय सिंह जी ने 18 वीं शताब्दी में दिल्ली में जन्तर मन्तर का निर्माण कराया , इसी के साथ दूधिया भैरू जी के मंदिर का निर्माण भी कराया गया । भारतीय पुरातत्व विभाग,नई दिल्ली ने भारतीय पुरातत्व संपदा संरक्षण अधिनियम,1904 के सेक्शन 4 के सब सेक्शन 2 के तहत जन्तर मन्तर को संरक्षित संपदा घोषित की गई । दिनांक 21 मई,1962 को गिफट डीड तहरीर कर (राज्यपाल, राजस्थान व राष्ट्रपति भारत के प्रतिनिधियों के मध्य) जन्तर मन्तर का 26130 वर्ग गज भू भाग पुरातत्व विभाग को संभलाया गया । शेष क्षैत्र मंदिर व रिक्त भूमि सेवा पूजनार्थ देवस्थान विभाग के पास रहा ।

दिनांक 22 व 24 अप्रेल,1964 को तत्कालीन आयुक्त द्वारा मंदिर का निरीक्षण करने पर पुजारियों द्वारा रिक्त भूमि पर बगीची लगाने,उसके फलों का उपयोग करना पाया गया इस पर इस भूमि के विकास की योजना बनाने के निर्देश दिये । सहायक अभियन्ता, देवस्थान ने वास्तुकार नई दिल्ली के पत्र 368 दिनांक 4.11.69 से प्लान तैया किया । इस प्लान अनुसार कार्य की स्वीकृति हेतु पत्र सं0 एफ 4(38)देव/79/18643 दिनांक 4.10.79 द्वारा नगर परिषद ,नई दिल्ली को भेजा गया । पुरातत्व विभाग से भी अनापत्ति प्रमाण पत्र चाहा गया । राजस्व सचिव महोदय ने पत्रांक प.13(27)राज/3/81 दिनांक 1.4.83 से उप राज्यपाल, राज भवन, देहली को पत्र लिखा कि '' नगर पालिका द्वारा एक प्रति नक्शे की नगर पालिका के चीफ आर्किटेक्ट,देहली विकास प्राधिकरण अरबन आर्ट कमीशन एवं लेण्ड डवलपमेन्ट ऑफिसर निर्माण भवन आदि को सहमति हेतु भेजे गये जिसमें से अरबन आर्ट कमीशन में अपनी सहमति दे दी लेकिन अधीक्षक पुरातत्व विभाग ने सहमति नहीं दी

। पुरातत्व विभाग ने अपने पत्र सं0 2629 दिनांक 4.12.84 से पुरातात्विक दृष्टिकोण से निर्माण की स्वीकृति नहीं देने हेतु लिखा गया ।

दिनांक 22.8.1988 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर ने अपने कक्ष में देवस्थान से संबंधित विषयों पर विचार विमर्श किया जिसके बिन्दु संख्या 4 में प्रश्नगत संपदा पर यात्री निवास,भोजनशाला व सत्संग भवन निर्माण कराने की योजना तैयार की जो अर्द्ध शासकीय पत्रांक एफ 4(18)संपदा/देव/88/11538/दिनांक 3.12.88 से राजस्व सचिव महोदय को प्रेषित की गई । राज्य सरकार ने नई दिल्ली स्थित अधिकारियों से पत्राचार कर पत्र सं0 पं.13(27)राज/3/89/दिनांक 23.12.91 के साथ उप राज्यपाल नई दिल्ली द्वारा मुख्यमंत्री जी को लिखे पत्र की प्रति भिजा मामले की प्रगति चाही गई । उपराज्यपाल ने लिखा कि प्रश्नगत संपदा '' संगठित खुला ऐतिहासिक स्मारक है ।अतः स्वीकृति दिया जाना संभव नहीं है । ''

ऐतिहासिक स्थल जन्तर मन्तर से लगी होने,जनपथ लेन पास ही होने से यह भूमि नई दिल्ली की महत्वपूर्ण संपदा है । गेस्ट हाउस बनाने के लिये राजस्थान स्टेट माईन्स व मिनरल्स,उदयपुर,लघु उद्योग निगम आदि भूमि को प्राप्त करने हेतु प्रयासरत थे । देस्थान की भूमि को विक्रय करने के संबंध में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के कक्ष में दिनांक 7.5.97 को विचार विमर्श हुआ । मंत्री मण्डल निर्णय 53/97 के अनुसार मंदिर श्री भैरू जी के पास रिक्त भूमि निलामी के बारे में नियमों का परीक्षण कर संपदा विक्रय बाबत विस्तृत नोट पत्रांक एफ 1(2)संपदा/देव/96/11299 दिनांक 13.10.97,2959 दिनांक 16.3.99 व 4745 दिनांक 17.4.99 द्वारा प्रेषित किया गया ।

मंदिर भूमि के विकास के संबंध में राज्य सरकार के पत्र क्रमांक प. 7(13)देव/97 दिनांक 12.9.2000 से प्राप्त मै0 उमा शर्मा एण्ड कम्पनी,देहली प्रा0 लि0 के आवेदन पत्र के संबंध में पत्रांक 10972 दिनांक 17.11.2000 द्वारा टिप्पणी प्रेषित की गई । इस पर शासन के समसंख्यक पत्र दिनांक 2.12.2000 द्वारा मंदिर भूमि पर हाट बाजार लगाने के संबंध में प्रस्ताव चाहे गये । हाट बाजार के संबंध में चाही गई सूचना भी पत्रांक 691 दिनांक 23.1.2001 द्वारा शासन को प्रेषित की गई । मंदिर भूमि पर 33 दुकानों का हाट बाजार बनाने का प्रस्ताव एवं तखमीना पत्रांक 7367 दिनांक 17.7.2001 द्वारा शासन को प्रेषित किया गया प्रकरण शासन स्तर पर विचाराधीन है ।

उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद में स्थित देवस्थान विभाग के मंदिरों एवं उसकी संपदाओं के संबंध में संक्षिप्त विवरण :–

क्र0सं0	स्थान	राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार	राजकीय आत्म निर्भर	राजकीय सुपुर्दगी	योग
1.	मथुरा	–	1	4	5
2.	वृन्दावन	2	7	5	14
3	बरसाना	1	1	–	2
4	गोवर्धन	–	2	11	13
5	राधा कुण्ड	–	2	2	4
6	कुसुम सरोवर	–	–	2	2
7	चन्द्र सरोवर	–	–	1	1

मथुरा शहर : मथुरा शहर में विभाग द्वारा प्रबंधित एक राजकीय आत्म निर्भर श्रेणी का मंदिर श्री मदन मोहन जी,स्वामी घाट पर स्थित है । इस मंदिर की मूर्ति उदयपुर स्थित मंदिर श्री मदन मोहन जी,घाटी में प्रतिष्ठित है को सेवा पूजा वल्लभकुल सम्प्रदाय के अनुरूप की जा रही है । रिक्त मंदिर संपदा श्री कल्याणराय जी चेरिटेबल ट्रस्ट,कांकरोली जिला राजसमंद को आदेश क्रमांक एफ 3(10)सामान्य/देंव/97/5867–69 दिनांक 31.5.04 द्वारा सुपुर्दगी में दिया हुआ है सुपुर्दगी में लेने के बाद प्रन्यास द्वारा मंदिर में क्या गतिविधियॅा की गई सूचना अपेक्षित है । मंदिर संपदा के 4 किरायेदार हैं, किराये की 8712/–रू0 वार्षिक मांग बनती है ।

मथुरा शहर में ही राजकीय सुपुर्दगी श्रेणी के निम्न चार मंदिर स्थित है :–

1. मंदिर श्री सीताराम जी,विश्राम घाट,मथुरा
2. मंदिर श्री मोहन जी कुंज अलोनिया,वृन्दावन दरवाजा ,मथुरा

3. मंदिर श्री दाउ जी भूतेश्वर जी, मथुरा ।

4. मंदिर श्री गोपाल जी, गउ घाट,मथुरा

इनमें से क्रम संख्या 2 व 3 में वर्णित मंदिरों की व्यवस्था वर्तमान में विभाग द्वारा आत्म निर्भश्र श्रेणी के मंदिरों के अनुरूप की जा रही है । मोहन जी कुंज अलौंनिया मंदिर की सेवा पूजा के लिये निधि सेवा के दो कर्मचारी नियुक्त है। जिन्हें वेतन के रूप में 600/–रूपये मासिक, भोग हेतु 900/–रू0 मासिक दिये जाते हैं । मंदिर संपदा के 43 किरायेदार हैं किराये की 1,08,356.00 रू0 वार्षिक मांग बनती है । मंदिर श्री दाऊ जी भूतेश्वर जी, में भी निधि सेवा का पुजारी नियुक्त है जिसे 300/–रू0 मासिक वेतन व 900/'रू0 मासिक भोग के दिये जाते हैं ।

<u>वृन्दावन :</u>

वृन्दावन में प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के दो आत्म निर्भर श्रेणी के सात व सुपुर्दगी श्रेणी के पांच मंदिर स्थित है । मंदिरवार संक्षिप्त टिप्पणी निम्नुनसार हैः–

1. **मंदिर श्री राधा माधव जी, जयपुर मंदिर वृन्दावन :** इस मंदिर का निर्माण जयपुर के महाराजा माधो सिंह जी द्वितीय द्वारा 1917 ईस्वी में करवाया था । मंदिर के गर्भ गृह में तीन उपमंदिर है । प्रमुख मंदिर में काले पाषाण की श्री कृष्ण की प्रतिमा तथा राधारानी की पीतल की प्रतिमा विराजमान है । दक्षिण वाले उप मंदिर में भगवान हंस गोपाल व सनकादिक आदि की सफेद पत्थर की प्रतिमायें है । इसके साथ ही भगवान कृष्ण के गिरिराज को उठाये काले पाषाण की प्रतिमा है । उत्तर वाले उप मंदिर में भगवान आनन्द बिहारी जी की चल प्रतिमा जो प्रमुख प्रतिमा का छोटा स्वरूप है । मंदिर की सेवा पूजा व्यवस्था हेतु पुजारी,चौकीदार के पद राज्य सेवा के सृजित हैं । मंदिर के नेवेध्य हेतु 24583/–रू मासिक स्वीकृत हैं । मंदिर संपदा में 12 किरायेदार है , किराये की वार्षिक मांग रूपये 58573/– बनती है । मंदिर की

व्यवस्था हेतु प्रबंधक का पद भी राज्य सेवा में सृजित है । मंदिर परिसर में ही सहायक आयुक्त देवस्थान कार्यालय वृन्दावन स्थापित है । यह मंदिर विशाल भू–भाग में स्थित है । विभाग ने मंदिर के रिक्त भू भाग का उपयोग करने हेतु निम्न प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रेषित किये हैं जो विचाराधीन है :–

मंदिर के बाहर सड़क के उस पार मंदिर की खुली भूमि पडी हुई है जो श्रीपाद बाबा को लीज पर दी गई थी । श्रीपाद बाबा ने भूमि राजस्व अभिलेख में अपने नाम करवा ली । भूमि पुनः मंदिर के नाम कराने का प्रकरण आयुक्त, आगरा मण्डल,आगरा में विचाराधीन है ।

क्र0सं0	स्थान	नाम मंदिर	श्रेणी	सम्प्रदाय	भोग नेवेध्य व्यय	प्रस्तावित योजना	विशेष विवरण
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	मथुरा	मं0श्री मदन मोहन जी	रा0आ0नि0	वल्ल्भ कुल	–	–	मंदिर संपदा श्री कल्याणराय जी चेरिटेबल ट्रस्ट कांकरोली जिला राजसमंद को आदेशक्र0एफ3 (10)सामान्य/देव/97/5867 दिनांक 31.5.04 से सुपुर्दगी में दिया । 4 किरायेदार
		मं0श्री मोहन जी कुंज अलोनिया व दाउ जी भूतेश्वर जी	सुपुर्दगी		900 900	–	मंदिर के सुपुर्दगार के स्वर्गवास पश्चात मंदिर की व्यवस्था विभाग के नियंत्रण में है ।मंदिर को आत्म निर्भर श्रेणी के रूप में संचालित किया जा रहा है । 43 किरायेदार
2.	वृन्दावन	मं0श्री राधामाधव जी (जयपुर मंदिर)	रा0प्र0प्र0	निम्बार्क	24,583	मंदिर के बाहर खाली रिक्त भूमि लगभग 900 वर्ग गज पर 12 दुकानों का निर्माण हेतु भूमि खुली निलामी से किराये पर देना। मंदिर परिसर में गेस्ट हाउस,ओडिटोरियम,उद्यान आदि का निर्माण कराना ।	मंदिर के बाहर सड़क के उस पार स्थित भूमि के नामान्तरण का प्रकरण न्यायालय आगरा मण्डल आगरा में विचाराधीन है। 12 किरायेदार
		मं0श्री राधाकान्त जी,	––''––		4,166	धर्मशाला व सन्त निवास का निर्माण कराना ।	–
		मं0श्री चतुरशिरोमणी जी,	रा0आ0नि0		900	–	3 किरायेदार
		मं0श्री गोकुलानन्द जी,	––''––	निम्बार्क	–	–	यह मंदिर सुपुर्दगी में दिया गया है
		मं0श्री कुंज बदन सिंहजी ,	––''––	–	–	–	मंदिर में मूर्ति विराजमान नहीं है । मंदिर संपदा पर मल्लाहों का अतिक्रमण है ।
		मं0श्री अजब मनोहर जी	––''––		1,800	–	16 किरायेदार
		मं0श्री रूपकिशोर जी	––''––		900	–	5 किरायेदार
		मुं0श्री कुंज पार्वती जी	––''––		1,500	–	–
		मं0श्री हरिशिरोमणी जी	––''––		1,500	धर्मशाला व व्यवसायिक कॉम्पलेक्स निर्माण का प्रस्ताव ।	मरम्मत योग्य 10 किरायेदार

3.	राधाकुण्ड	मं0श्री किशोरी श्याम जी	––''––		900	–	6 किरायेदार
		मं0श्री कुंज लाल दास	––''––			–	9 किरायेदार
4	गोवर्धन	मं0श्री बिहारी जी	––''––		900	–	15 किरायेदार
		मं0श्री लक्ष्मण जी	––''––		900		–
5.	बरसाना	मं0श्री कुशल बिहारी जी	रा0प्र0प्र0	निम्बार्क	22,083	कर्मचारियों के आवास निर्माण कराने ।	1 किरायेदार
		मं0श्री जुगल किशोर जी	रा0आ0नि0		900	–	मंदिर संपदा पर श्री यादराम उर्फ गुल्लु का अतिक्रमण । 5 किरायेदार

मथुरा ,वृन्दावन,गोवर्धन,राधाकुण्ड ,कुसुम सरोवर व चन्द्र सरोवर में स्थित सुपुर्दगी श्रेणी के मंदिरों की सेवा पूजा की व्यवस्था सुपुर्दगार द्वारा की जाती है ।

क्र.सं.	नाम मंदिर	कुल व्यवसायिक संपदा	किराये पर दी हुई संपदाओं की सं0	किरायेदार का नाम	संपदा काा विवरण	मासिक किराया
1.	2.	3	4	5	6	7
1.	मं0 श्री मोहन जी कुंज अलौनिया ,मथुरा	34	34	श्री आशु खण्डेलवाल	गोदाम	86.00
				श्री ओम प्रकाश पुत्र बिहारी	दुकान1	12.00
				श्री ओम प्रकाश	दुकान व गोदाम	75.00
				श्री कालीचरण	दुकान 1	25.00
				श्री बनवारी लाल	दुकान 1	44.00
				श्री विष्णु प्रसाद	दुकान व हाल एक	162.00
				श्री निरज कुमार	गोदाम एक	127.00
				श्री अशोक कुमार	दुकान दो खाना	61.00
				श्री राजेन्द्र कुमार	दुकान 1	61.00
				श्री बांके बिहारी	दुकान की छत	44.00
				श्री बांके बिहारी	दुकान 1	70.00
				श्री बांके बिहारी	गोदाम 1	335.00
				श्री कृष्ण कुमार	दुकान 1	98.00
				श्री कृष्ण कुमार	दुकान 1	151.00
				श्री कृष्ण कुमार	दुकान की छत	40.00
				श्री गोविन्द शरण	दुकान 1	44.00
				श्री लक्ष्मीनारायण	गोदाम 1	93.00
				श्री किशन चन्द	नोहरा व कमरा 1	225.00
				श्री रामस्वरूप	दुकान दो खनी	89.00
				श्री प्रभुदयाल	दुकान 1	89.00
				श्री रामस्वरूप	दुकान 2 खनी	89.00
				श्री सूरजभान	दुकान 2 खनी	63.00
				श्री गोपालदास	दुकान 2 खनी	23.00
				श्री दिनेश चन्द्र	छत 1	83.00
				श्री बेदराम	दुकान 1	89.00
				श्रीधनश्यामदास	दुकान 2 खनी	78.00
				श्री नत्थी लाल	दुकान 1	99.00
				श्रीमती लक्ष्मी देवी	दुकान 1	106.00
				श्री रामगोपाल	छत छः	79.00
				श्रीमती सावित्री देवी	दुकान 1	68.00
				श्री रास बिहारी	जमीन	12.00

				श्री बृजमोहन लाल अग्रवाल	क्चहरी व टीन शेड	4724.00	
				श्री मूरारी लाल	दुकान दो	194.00	
				श्री ईश्वरी चन्द	दुकान 1	110.00	
2.	मं0श्री मदनमोहन जी,स्वामी घाट,मथुरा	3	3	श्री पुरूषोतमपूरण चन्द	दुकान 1	79.00	
				श्री केदारनाथ जयन्ती प्रसाद	दुकान 1	16.00	
				श्री गोवर्धनदास	दुकान 1	253.00	
3.	मं0श्री अजब मनोहर जी ,वृन्दावन	8	8	श्री बृजकिशोर	दुकान 1	81.00	
				श्री विदुर देव	दुकान 1	69.00	
				श्री राधारमण	दुकान 1	73.00	
				श्रीमती शान्ति देवी	दुकान 1	66.00	
				श्री अरविन्द कुमार	दुकान 1	66.00	
				श्री मदन लाल	दुकान 1	84.00	
				श्री नियामतराम	दुकान 1	66.00	
				श्री योगेश कुमार	दुकान 1	72.00	
4.	मं0 श्री रूप किशोर जी,	5	5	श्री रामजी लाल	दुकान 1	35.00	
				श्रीमती उषा अग्रवाल	दुकान 1	70.00	
				श्री गोरकिशोर	दुकान 1	40.00	
				श्री गोरकिशोर	दुकान 1	40.00	
				श्री श्यामसुन्दर	दुकान 1	35.00	
5.	मं0 श्री किशोरी श्याम जी,राधा कुण्ड	4	4	श्री रघुनाथ प्रसाद वैश्य	दुकान 2	155.00	
				श्री ईश्वरी प्रसाद	दुकान 1	20.00	
				श्री रतन लाल	दुकान 1	17.00	
				श्री रघुनाथ प्रसाद	दुकान 1	99.00	
6.	म्0 श्री जुगलकिशोार जी बरसाना	3	3	श्री उत्तमकृष्ण	दुकान 1	42.00	
				श्री रमण लाल	दुकान 1	60.00	
				श्री विजेन्द्र कुमार	दुकान 1	300.00	

क्र.सं.	नाम मंदिर	कुल आवासीय संपदा	किराये पर दी हुई संपदाओं की सं0	किरायेदार का नाम	संपदा काा विवरण	मासिक किराया
1.	2.	3	4	5	6	7
	मं0 श्री मोहन जी कुंज अलौनिया ,मथुरा	9	9	श्री सुन्दर लाल	कमरा बरामदा	196
				श्री रामशरण	—''—	162
				श्री रविन्द्र कुमार	कमरा ओरी रसोई चौक	161
				श्री छोटे लाल	कमरा एक	64
				श्री कम्पू सिंह	कमरा तिबारी	100
				श्री बांके बिहारी	कमरा	15
				श्री त्रिलोकीनाथ	छः छत	296
				श्रीमती पुष्पा देवी	चार कमरे चौक पोरी बरामदा रसोई लेट बाथ	481
				श्री राजाधीराज द्वारकाधीश जी	ज्मीन	1168
2.	मं0 श्री मदन मोहन जी	1	1	श्री राम शरण	4 कमरे चौक रसोई तिबारी	485
3.	मं0श्री अजब मनोहर जी वृन्दावन	14	8	श्री गोकूल चंद	5 कमरे	398
				श्री गोपाल प्रसाद	4 कमरे	251
				श्रीमती उर्मिला शर्मा	3 कमरे	150
				श्री मूरारी लाल	1 कमरा	132
				श्री भगवानदास	2 कमरे	178
				श्री श्यामसुन्दर	2 कमरे	133
				श्री दीनदयाल	2 कमरे	131
				श्री कृष्ण मूरारी	2 कमरे	95
4.	मं0 श्री हरिशिरोमणी जी	14	10	श्री दौलत राम	क्मरा बरामदा	95
				श्री अगनो माली	2 कमरे	44
				श्री शिवचरण	1 कमरा	39
				श्री रामस्वरूप	क्मरा बरामदा	251
				श्री शंकर लाल	——''——	233
				श्री गिर्राज सिंह	2 कमरे	270
				श्री कमल वासनी	3 कमरे	202
				श्री बिहारी लाल	1 कमरा	105

				श्री मोहन लाल	एक कमरा	78	—	—	—	—	—	—
				श्री श्याम लाल	2 कमरे बरामदा	174	—	—	—	—	—	—
5.	मं0श्री चतुरशिरोमणी जी	7	2	श्री बाबू लाल	1 कमरा	127	—	—	5 कमरे	खण्डहर	5कमरे	—
				श्री केदार नाथ	1 कमरा	83	—	—	—	—	—	—
6.	मं0 श्री जुगल किशोर जी बरसाना	3	1	श्री गोविन्दराम	2 कमरा	2	—	—	2 कमरे	खण्डहर	2 कमरे	—
7.	मं0श्री बिहारी जी गोवर्धन	15	15	श्री मनोहरी लाल	जमीन	83	—	—	—	—	—	—
				श्री अनन्त राम	जमीन	69	—	—	—	—	—	—
				श्री अनन्त राम	—''—	36	—	—	—	—	—	—
				श्री घासीराम	—''—	82	—	—	—	—	—	—
				श्री बसन्त लाल	—''—	49	—	—	—	—	—	—
				श्री सोहन लाल	1 कोटडी	41	—	—	—	—	—	—
				श्री प्रभुदयाल	जमीन	93	—	—	—	—	—	—
				श्री फुलचंद	—''—	99	—	—	—	—	—	—
				श्री मंगल	—''—	40	—	—	—	—	—	—
				श्री नन्नुराम	—''—	26	—	—	—	—	—	—
				श्री साधुराम	1 कोटडी	22	—	—	—	—	—	—
				श्री जगन्नाथ	जमीन	61	—	—	—	—	—	—
				श्री रामजी लाल	—''—	92	—	—	—	—	—	—
				श्री साधुराम	एक कोटडी	52	—	—	—	—	—	—
				श्री गोपीचंद	—''—	22	—	—	—	—	—	—
8.	मं0श्री कुंज लाल दास	9	9	श्रीमती मग्गो देवी	एक कमरा	309	—	—	—	—	—	—
				श्री फत्ते माली	—''—	359	—	—	—	—	—	—
				श्रीमती गेंदा देवी	—''—	238	—	—	—	—	—	—
				श्री बुद्धिमाली	दुकान कमरा	197	—	—	—	—	—	—
				श्री नन्हे भडभुजा	क्मरा	38	—	—	—	—	—	—
				श्री गिर्राज सिंह	दुकान	76	—	—	—	—	—	—
				श्री केला कुम्हार	एक कमरा	69	—	—	—	—	—	—
				श्रीमती प्रभाती	—''—	20	—	—	—	—	—	—
				श्री अक्षय खाती	—''—	141	—	—	—	—	—	—
9	मं0श्री किशोरीश्याम जी राधाकुण्ड	3	3	श्री भगवान प्रसाद	1 हाल 4 दुकानें 4 कमरे	348	—	—	—	—	—	—
				श्री सोनीराम	जमीन	35	—	—	—	—	—	—

10	मं0श्री राधामाधव जी वृन्दावन(प्रत्यक्ष प्रभार)	12	12	श्री हरि सिंह निमोदिया	–	50	–	–	–	–	–	–
				श्री बाबू लाल शर्मा	–	262	–	–	–	–	–	–
				श्री राधे लाल		344	–	–	–	–	–	–
				श्री जीवन लाल		147	–	–	–	–	–	–
				श्री रामकिशोर		224	–	–	–	–	–	–
				श्री दूल्हेराम		147	–	–	–	–	–	–
				श्री नेक सिंह		92	–	–	–	–	–	–
				राधा रसिक मण्डल		1632	–	–	–	–	–	–
				श्रीमती विजय कुंवर		103	–	–	–	–	–	–
				आदर्श विद्या मंदिर		768	–	–	–	–	–	–
				श्रीपाद बाबा		261	–	–	–	–	–	–
				श्रीपाद बाबा		1000	–	–	–	–	–	–
11.	म्र0श्री कुशल बिहारी जी बरसाना	1	1	श्री नन्द लाल		1250	–	–	–	–	–	–